Reg. No. BR/2025/0487469

TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अक्टूबर 2025 | अंक 14

दीपोत्सव विशेषांक

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

दीपोत्सव विशेषांक

अंधकार पर प्रकाश की विजय, असत्य पर सत्य की स्थापना और निराशा पर आशा का आलोक — यही है दीपोत्सव का संदेश।

हर दीपक जब टिमटिमाता है, तो केवल तेल से नहीं, बल्कि विश्वास और सकारात्मकता से जलता है। यही दीप हमारे भीतर भी जगमगाएँ — यही इस दीपोत्सव की सार्थकता है। 'पद्यपंकज' के इस दीपोत्सव विशेषांक में हम सबने मिलकर शब्दों के दीप जलाए हैं कविता, भाव और अनुभूति के दीप।

हर रचना में प्रेम है, करुणा है, प्रेरणा है, और शिक्षकों की वह अलौकिक ज्योति है जो समाज को दिशा देती है। शिक्षक केवल ज्ञान के दीपक नहीं जलाते, वे अपने विद्यार्थियों के जीवन में उजास फैलाने वाले स्वयं दीप बनते हैं।

इस विशेषांक में प्रकाशित प्रत्येक कविता एक दीप की तरह है — जो पाठकों के मन को आलोकित करेगी।
आइए, इस दीप पर्व पर हम सब मिलकर अंधकार मिटाने वाले शब्दों के दीप जलाएँ, सकारात्मकता और सृजनशीलता का उत्सव मनाएँ।

शुभ दीपावली!
सादर,
Teachers of Bihar परिवार

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय

नारायणपुर, बिक्रम, पटना

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रधान संपादक की कलम से

दीप जलाएँ ज्ञान का, अंतस भरे उजास।
प्रेम मुदित सुंदर सदा, संग करे सब वास।।

साथियों,

पद्यपंकज मासिक पत्रिका का अक्टूबर अंक 'दीपोत्सव विशेषांक' के रूप में आपको प्रस्तुत किया हूँ जिसमें बिहार के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत दीपक की भाँति सदैव प्रकाशमान रहने वाले हमारे शिक्षकों की लेखनी से निकली रचनाओं का संकलन है जो प्रकाश की उस लौ के समान सतत तिमिर को चीरकर अपनी उपस्थिति का भान कराते रहती है।

दीपोत्सव हमारे लिए एक दिन का पर्व नहीं है बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति की पहचान है। भारत के वास्तविक स्वरूप का प्रतिबिम्ब है जो अनवरत देदिप्यमान रहती है। हमारे शिक्षक सदैव ज्ञान ज्योति जलाने में तत्पर रहते हैं। प्रतिक्षण शिक्षकों के उसी दीप दान के परिणाम स्वरूप आज हम नित्य नये प्रतिमान गढ़ रहे हैं। और हम बाहय जगत के अँधकार के साथ-साथ अंत:मन के तिमिर को भी दूर करने में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

तो आइए हमारे दीप-दान में आप भी एक लौ बनकर तिमिर को मिटाएँ और दीपोत्सव का जश्न मनाएँ। हमारे सजग पाठक वृंद इस विशेषांक को पढ़ें और यदि अब भी कोई क्षेत्र में तिमिर शेष रह गयी हो तो सादर सूचित करें और हमारे समूल तिमिर नाश के संकल्प दीप को प्रज्वलित रखने में अपनी महती भूमिका निभाएँ।

नाश तिमिर का हम करें, खुद ही बनकर दीप।
आलोकित जग हो सके, कलुष न रहे समीप।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा
संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	दिवाली है आई	मनु कुमारी	8
2	ज्योति-पर्व दीपावली	राम किशोर पाठक	9
3	दीपों की गरिमा	अमरनाथ त्रिवेदी	10
4	ऐसी होती दिवाली	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	11
5	दीप पर्व	राम किशोर पाठक	12
6	दीपावली	एस. के. पूनम	13
7	दिवाली की रात	जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'	14
8	मिलकर दीप जलाएँ	राम किशोर पाठक	15
9	हुई रौशनी जगमग जगमग	अमृता कुमारी	16
10	श्री का अवतार	रत्ना प्रिया	17
11	दीपावली	रुचिका	18
12	राम आए अयोध्या	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी	19
13	दीप रश्मियाँ	राम किशोर पाठक	20
14	उम्मीद का दिया	अवधेश कुमार	21
15	दिवाली	नीतू रानी	22
16	दीपक के कई रूप	रत्ना प्रिया	23
17	दीपावली का त्योहार	आशीष अम्बर	24
18	दीप ज्योति नमो नमः	राम किशोर पाठक	25

दिवाली है आई

दीप जलाओ दीप जलाओ दिवाली है आई
घर आंगन में चहुंओर अब,खुशियाली है छाई।

मैं तो लूंगी फुलझड़ियां ,तू पटाखे ले लो भाई।
नाचो गाओ खुशी मनाओ , दिवाली है आई।।

आतिशबाज़ी घर के बाहर, सोच समझकर करना।
शोर – शराबा कहीं नहीं हो, दिवाली है आई।।

रंगोली से घर को सजाओ,जगमग दीप जलाओ।
नये- नये सब कपड़े पहनो, दिवाली है आई।।

उक्कापाटी खेल में सब मिल,पंच पाप जलाओ।
आशीर्वाद बड़ों से ले लो, दिवाली है आई।।

ज्ञान का दीपक रोज जलाओ, अज्ञान को दूर भगाओ।
सदा सत्य की राह चलो तुम, दिवाली है आई।

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

मनु कुमारी
प्राथमिक विद्यालय दीपनगर
बिचारी , राघोपुर ,सुपौल

ज्योति-पर्व दीपावली

हर्षित आज सभी नर-नारी, सुंदर सुखद तराना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।
आज अमावस हार गया है, नहीं तिमिर टिकने वाला।
फैला यह नभ तक उजियारा, आज नहीं थमने वाला।।
गगन भेदती दीप-रश्मियाँ, नाश तिमिर का करती है।
अँधियारा तो जैसे छुपकर, डर-डर आहें भरती है।।
आया मौसम है मनभावन, लगता बहुत सुहाना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।०१।।

पूनम सी चादर को ओढ़े, आज निशा जैसे आयी।
नही सुधाकर आज गगन में, फिर भी लगती हर्षायी।।
बनकर दुल्हन आज विभावरी, मनमोहक सी लगती है।
छूट रही जो यहाँ पटाखे, स्वागत जैसे करती है।।
गाँव-नगर घर का हर कोना, सबको आज सजाना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।०२।।

एक दीप से जलें हजारों, जिससे बनती यह माला।
एक अकेला बना कांरवा, है अम्बर को छू डाला।।
दीपोत्सव का पर्व अनोखा, मन आनंदित है होता।
भेद सकें हम सभी लक्ष्य को, बीज हौसलों का बोता।।
माला दीपों की पहनाकर, घर-आँगन चमकाना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।०३।।

जलकर दीपक राह दिखाता, सत्य सदा समझाता है।
हिम्मत कहाँ अँधेरे में जो, हरपल भय दिखलाता है।।
ज्यों चिराग जलने को होता, छिप जाती है अँधियारा।
हिम्मत के संबल को रखकर, बोलो किसने है हारा।।
दीपोत्सव पर्व उजाले का, सबको यह सिखलाना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।०४।।

बैर-भावना त्याग सभी से, हृदय-प्रेम से हम भर लें।
कोई कुंठा रहे न मन में, तिमिर हरण ऐसा कर लें।।
कलुष भावना का अँधियारा, प्रेम रश्मियों से हरते।
मानवता की पावन लड़ियाँ, रिश्तों में संबल भरते।।
"पाठक" हर्षित होकर निकला, सबको गले लगाना है।
अगणित दीप जलाकर भू का, सारा तिमिर मिटाना है।।०५।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय कालीगंज
उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

दीपों की गरिमा

दीप उम्मीद की किरण है,
जो सपनों को जगाती।
दिल मे प्रकाश भरकर,
मन मे उजास लाती।

कभी नफरत नही सिखाती,
जहाँ तक प्रकाश जाए।
मन मे उजास भरकर,
घर खुशियों से सजाए ।

प्रकाश की मति ही ऐसी,
वह कहीं छिपने तनिक न पाए।
जीवन मे प्रकाश भरकर,
हिया खुशियों से जगमगाए।

दिवाली के दिन हम सब,
जलते दीपों से सीख ले लें ।
स्वयं हरपल जलकर,
दूसरों मे प्रकाश भर दे।

महत्त्व इसका कभी नही है,
वह कितनी देर प्रकाश करता।
है मुद्दा बड़ा यह कि
वह कैसे प्रकाश भरता।

अपने आप मे प्रकाश है यह,
है यह शुभता का सूचक।
यह शुभ्र गुणों का द्योतक,
यह सभ्यता का मूलक।

हमारे जीवन मे,
हर वर्ष यह आए।
अपने मधुरिमा से,
हम् सबको जगमगाए।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा, जिला मुज़फ्फरपुर

ऐसी होती दिवाली

कुकुभ छंद

मानस में दुर्भाव न होता,मुख पर बस होती लाली।
आओ सोच-विचार करें हम,
ऐसी होती दीवाली।।

जितना हो सामर्थ्य हमारा,उतना भी कर पाते तो।
पास झोपड़ी में हम जाकर,पहला दीप जलाते तो।।
किया उजाला जिस घर होता,बजती उस घर में ताली।
आओ सोच-विचार करें हम,
ऐसी होती दीवाली।।

ऐसा दीप जलाया होता, राग-द्वेष भी जल जाते।
ऊँच-नीच की खाई समतल,दो दिल आपस कर जाते।।
हृदय-गगन में दीपक जलता,रोती विभावरी काली।
आओ सोच विचार करें हम
ऐसी होती दीवाली।।

वाणी कोयल वाली होती,सुनकर सभी अघाते तो।
मुख से भर-भर मीठी बोली, रामराज ले आते तो।।
गाँठ लगे ना होते दिल में ,होते फिर गौरवशाली।
आओ सोच विचार करें हम,
ऐसी होती दीवाली।।

रोते तो सब मिलकर रोते,हँसते तो हँसते सारे।
रहते बनकर चाँद-चाँदनी,या बनकर रहते तारे।।
सारा जग तरुवर हो जाता,हम होते उसकी डाली।
आओ सोच-विचार करें हम,
ऐसी होती दीवाली।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मध्य विद्यालय दरवेभदौर

दीप पर्व

मनहरण घनाक्षरी

दीप पर्व अनुपम,
आया हरने को तम,
रहे नहीं कोई गम, दीप को जलाइए।

करें गणेश वंदन,
लक्ष्मी पूजन-अर्चन,
हर्षित हो तन-मन, नवगीत गाइए।

शुभता की यह बेला,
रहे न कोई अकेला,
बनकर लक्ष्मी चेला, धन-धान्य पाइए।

राग- द्वेष मिटाकर,
भक्ति का बल पाकर,
अंतः दीप जलाकर, दिवाली मनाइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज
उत्तर टोला, बिहटा, पटना,
बिहार।

दीपावली

मनहरण घनाक्षरी

चहुँओर ज्योत जले,
मिट जाए अंधकार,
गणपति साथ बैठें ,आरती कर रहे।

नगर शहर और ,
किया कस्बों ने श्रृंगार,
प्रकाश से पुलकित,चाँद कुछ न कहे।

झिलमिल सितारों-सा,
लड़ियाँ लटक रही,
पटाखों का शोर आज,अनचाहे में सहे।

धन्य-धान भरपूर,
हरिप्रिया अवतार,
कामनाओं की आँचल,आज की रात गहे।

एस.के.पूनम

सेवा निवृत शिक्षक
फुलवारी शरीफ,पटना।

दिवाली की रात

मनहरण घनाक्षरी छंद

रोशनी का ये त्यौहार,
खुशियाँ लाता अपार,
घरों को सजाते लोग, दिवाली की रात में।

लाते हैं वल्बों की लड़ी,
छोड़ते हैं फुलझड़ी,
खुशियाँ मनाते सभी, मिलकर साथ में।

पटाखे की होती शोर,
आनंद में सराबोर,
जैसे अगवानी होती, दूल्हे की बारात में।

अनाथ व बीमारों के,
अपाहिज लाचारों के,
घर ले के जाएँ आज, मिठाई सौगात में।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म.वि. बख्तियारपुर, पटना

मिलकर दीप जलाएँ

आओ खुशी मनाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।
घना अँधेरा छाया।
धन्य अमावस आया।।

कहते सभी दिवाली।
इसकी कथा निराली।।
बच्चे हर्षित गाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०१।।

फुलझड़ी सभी छोड़ें।
खूब पटाखे फोड़ें।।
बना रहे रंगोली।
मदमस्तो की टोली।
सजी दीप मालाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०२।।

माँ पकवान बनाई।
आती खूब मिठाई।।
बंद हुआ है शाला।
हमनें मस्ती पाला।।
गीत प्रेम की गाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज
उत्तर टोला, बिहटा, पटना,
बिहार।

हुई रौशनी जगमग जगमग

हुई रौशनी जगमग जगमग
आज चारों ओर
आओ मनाएं खुशियां सारे
कि आज दीवाली है।

देखो ..गांव और शहर भी देखो
मानो तारे आसमां से
हमसे हैं मिलने आएं
कि आज दीवाली है।

चिंटू, बिट्टू तुम भी आओ
राधा, गीता को संग ले लाओ
खूब पटाखें और फुलझडियां
हम मिलकर साथ जलाएं
कि आज दीवाली है।

अरे! बच के सावधानी से
देखना कि हाथ न जल जाए
अभी है बाकी मिठाई खानी
कि आज दीवाली है।

अमृता कुमारी
उच्च माध्यमिक विद्यालय
बसंतपुर,सुपौल

श्री का अवतार

श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार।
भक्तों की सद्इच्छाएँ, पल में हों साकार ॥

श्री चरण के आग्मन से, शुभता का हो वास ,
दु:ख, दारिद्रय ऋण से मुक्त, जीवन में प्रकाश,
प्रसन्नचित्र मुद्रा में माँ भरती हैं भंडार।
श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार ॥

स्वच्छ, निर्मल हो भावना, सद्भाव का संकल्प,
चिरस्थाई श्रीवास का, दूजा नहीं विकल्प,
धनोपाजर्न सत्कर्म से, तब सुखमय परिवार
श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार ॥

प्रथम पूज्य गणेश संग, श्री का अवतार ,
है नूतन रूप प्रकृति का, गूँजित है आभार ,
हो शुभ-लाभ का आग्मन, ऋद्धि-सिद्धि का उपहार।
श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार ॥

गृहलक्ष्मी हैं नारियाँ, पाती हैं कई रूप,
माता, पत्नी, भगिनी, सुता लक्ष्मी के स्वरूप ,
कुल का धर्म निभाती है, भरती हैं संस्कार।
श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार ॥

माता के श्री चरणों में, शत्-शत् नमन-वंदन,
वरद् हस्त हो शीश सदा, जीवन बने चंदन,
वैभवशाली, सुख-शांति, श्रीयुक्त हो संसार।
श्री, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त, माता आई द्वार ॥

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय
माधोपुर
चंडी, नालंदा

दीपावली

दीपों की जगमग अवलि,
अँधेरों से देखो कैसे लड़ रही है
अमावस के गहन तिमिर को दूरकर
प्रकाश हर जगह बस रही है।

एक दीया प्रेम और विश्वास का
चलो मिलकर हम जलाएं
झूठी अना से दूर रहकर
सच्ची भावनाएं वह समझ पाए।

घर के मुंडेरों से लेकर
तुलसी के चौरा तक
जगमग जगमग रोशनी की कतारें
आह्लादित है मन
जोश मन में पाँव पसारे।

चलो एक दीया हौसलों का
हर मन में हम मिलकर जलाएं।
बुझे हुए हौसलों को
जगाकर मन में जोश भर जाएं

एक दीया प्रेम का निरन्तर जलता रहे,
ईर्ष्या,द्वेष के घने तिमिर को चीरकर
सद्भावना की रोशनी से
वह धरा को आलोकित करें।

चलो एक दीया सहानुभूति की
हम कुछ ऐसे जलाएं।
दर्द भले बाँट न सकें
मुस्कान होठो पर लाये।

यह दीपावली हो सबसे अलग,
सिर्फ घर ही नही रोशन करें
मन को भी रोशन कर जाए।

रुचिका
प्राथमिक विद्यालय कुरमौली
गुठनी सिवान बिहार

राम आए अयोध्या

दिवाली की बहुत बधाई और शुभकामनाएं
राम आए अयोध्या

राम आए अयोध्या दिए जल उठे ,
आज देखो अमावस पूनम हो गई।
हर गली हर डगर है बधाई बजे,
राम के नाम से ही लगन लग गई।

लाओ फूलों की डोली सिया लाडली,
उनके चरणों की लाली वहीं रह गई।
देख कर प्रेम अश्रु की अद्भुत छटा,
प्यारी अंखियां भरी की भरी रह गईं।

हैं दिवाली के दीपक अनोखे बड़े,
जले हैं सतत रौशनी आ गई।
राम जो आ गए प्राण भी आ गया,
न्याय उल्लास शांति सहज छा गई.

खोल दो बंद दिल के घरौंदों सभी,
भरत से मिलन की घड़ी आ गई।
है आनंदित सभी देव गंधर्व गण,
देखो मधुवन नमन की लड़ी छा गई।

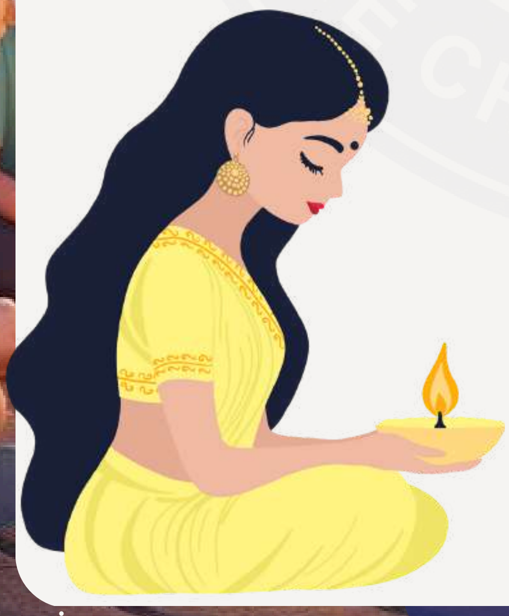

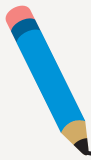

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

दीप रश्मियाँ

ज्ञान सत्य का हुआ नहीं तो, कहते हम अज्ञानी है।
दीप रश्मियाँ जहाँ नहीं है, अँध की वहीं कहानी है।।

एक अकेला किरण अगर हो, रहता तम का नाम नहीं।
सतपथ का जो राही बनता, देता है पैगाम सही।।
निश्छल प्रेमिल मन करने की, पावन रीत पुरानी है।
दीप रश्मियाँ जहाँ नहीं है, अँध की वहीं कहानी है।।०१।।

धना अँधेरा हो कितना भी, दीपक ने उसे हराया।
साँस चली जब-तक दीपक की, अँधियारा लौट न पाया।।
जीवन सुरभित रखना है तो, मिलकर कदम बढ़ानी है।
दीप रश्मियाँ जहाँ नहीं है, अँध की वहीं कहानी है।।०२।।

रौशन रखने को जीवन को, खुद ही दीप जलाना है।
राग-द्वेष का कलुष मिटाकर, प्रेम हमें उपजाना है।।
जगमग अंतस भी तब होगा, पर्व लगे नूरानी है।
दीप रश्मियाँ जहाँ नहीं है, अँध की वहीं कहानी है।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज
उत्तर टोला, बिहटा, पटना,
बिहार।

उम्मीद का दिया

उम्मीद का दिया जलाता हूँ,
जीवन को नया अर्थ देता हूँ।

कुछ नया कर गुज़रने की चाह से,
अपने अन्तर्मन को जगाता हूँ।
दीपावली में करूँ एक गरीब घर को रौशन ,
ऐसा विश्वास जगाता हूँ ।

शिक्षक हूँ विज्ञान का ,
सुरक्षित दीपावली के बारे में , छात्रों को बताता हूँ ।
उम्मीद का दिया जलाता हूँ,
अंधेरों में भी मुस्कुराता हूँ।

बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों में आनंद लेता हूँ ,
झालर , कैंडिल और घरौंदों को उनके साथ सजाता हूँ ।
दीप जलाओ, दीप जलाओ , सकारात्मक ऊर्जा फैलाओ,
घर-आंगन रोशन करो, प्रेम और खुशियाँ लुटाओ।

हर दिया जलाकर रोशनी का सृजन करता हूँ,
बच्चों में सकारात्मकता, प्रेम और सद्भाव की ज्योति बढ़ाता हूँ
।
उम्मीद का दिया जलाता हूँ ,
खुशियों की मिठास फैलाता हूँ ।

अवधेश कुमार
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय रसुआर , मरौना , सुपौल

दिवाली

आओ बच्चों चलो मनाने
मिलकर हम सब दिवाली,
आएँगी सज-धज कर घर में
डोली पर बैठकर माँ काली।

दीपों से हम घर को सजाएँगे
मधुर से सजाएँगे हम थाली,
धूप अगरबत्ती माँ को दिखाएँगे
घर में होगी खुशहाली।

छप्पन प्रकार बनेगा घर में
खाएँगे सब भर- भर थाली,
आज खाने पर आ रही है
बड़े भैया की छोटी साली।

हम सब मिलकर सादगी से
मनाएँगे घर में दिवाली,
शोर शराबा नहीं करेंगे
प्रेम से बोलेंगे जय काली।

नीतू रानी
म०वि० रहमत नगर सदर
मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार।

दीपक के कई रूप

एक दीप,
आशा की किरण,
निराश मन की आशा |
एक ज्योति,
उज्ज्वल दृष्टि,
नयनों की ज्योति |
एक दीपक,
बुढ़ापे की लाठी,
कुल की कीर्ति |
एक दिया,
उम्मीदों की दीवाली,
सपनों का संसार |
एक प्रकाश,
पुण्य का आभास,
ईश्वर की आराधना |
एक किरण
ध्येय का पथ,
लक्ष्य को अग्रसर |
एक दृष्टि,
दो हृदयों का बंधन,
प्रेम का अंकुर |
एक उजाला,
आंखों की चमक,
ज्यों मंजिल हो पास |
एक प्रेरणा,
मंजिल की धुन,
सतत बढ़ने की प्रेरणा |
एक उम्मीद,
वर्षों का तप,
सतत हो संघर्ष |
दीपक के कई रूप-
कभी पुण्य का प्रकाश,
नित लक्ष्य का अभ्यास,
ध्येय पर विश्वास |
सपनों का संसार,
साहस हो अपार,
हर ले जो अंधकार |

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय
माधोपुर
चंडी, नालंदा

दीपावली का त्योहार

दीपावली का त्योहार आया,
संग में अपने खुशियाँ लाया।
रंगोली से घर को सजायेंगे,
मिलकर खुशियाँ खूब मनायेंगे।

दीपों की भी सजी कतार,
जगमग कर रहा अपना घर – द्वार।
अंधेरे को दूर भगाकर,
मानायेंगे हम प्रकाश का त्योहार।

दिल से हम दीपावली मनाएं,
वैर – द्वेष हम मन से मिटाएं।
आओ मिलकर हम सभी ,
बताशे और मिठाईयाँ खाएं।

जिनपर माँ लक्ष्मी की कृपा हो जाए,
यश – वैभव उसका कम न हो पाए।
हम सब पटाखे जलायेंगे,
दीपावली का त्योहार मनायेंगे।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरंभगा
बिहार

दीप ज्योति नमो नमः

यत्र नास्ति दीपं तत्र वा तिमिरं।
आगमनेसतत्र ज्योति कुतो वा तिमिरं।।
यतो दीपं ततो धर्मः।
दीप ज्योति नमो नमः।।

लोके दीपं सत्यस्वरूपं।
पथालोकितं यत भूपं।।
सदा कुर्वन्तु सद्कर्मः।
दीप ज्योति नमो नमः।।

देव भावं यथा आत्मशक्तिः।
प्रेम मुग्धा सदा भावभक्तिः।।
रमा रमन्ते जीवहित मर्मः।
दीप ज्योति नमो नमः।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें

शुभ दिपावली

शुभ दिपावली